

क्रिया के जिस रूप से उसके (क्रिया के) होने का समर्थ तथा इसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं।

i. वर्तमान काल

ii. भूतकाल

iii. भविष्यकाल

1. वर्तमान काल - भौजुदा समय को वर्तमान काल कहते हैं, अर्थात् जो क्रिया जारी रहती है, समाप्ति नहीं हुई हो उसे वर्तमान काल कहते हैं। यथा -  
राज पढ़ता है। राज पढ़ रहा है इत्यादि

वर्तमान काल के निम्नलिखित भेद होते हैं।

1. सामान्य वर्तमान - क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमान काल में होना पता जाए, 'सामान्य वर्तमान' कहलाता है। ~~यह~~ सामान्य वर्तमान काल के क्रिया के लड़ लकार का प्रयोग होता है यथा - राज पढ़ता है - राजः पठति।

तुम पढ़ते हो - त्वं पठसि।

मैं पढ़ता हूँ - अहं पठामि।

2. तात्कालिक वर्तमान या अपूर्ण वर्तमान - इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमान काल में हो रही है। अपूर्ण वर्तमान काल के क्रिया के साथ 'शतृ' प्रत्यय जोड़कर 'अस्' धातु का लड़ लकार में प्रयोग करते हैं। यथा -  
वह पढ़ रहा है - सः पठन् अस्ति।

पठ् + शतृ - पठ् + श् + अ + त् + लृ महीं 'श' और 'लृ' कालोप हो जाता है केवल 'अत्' बच जाता है।

पठ् + श् + अ + त् + लृ = पठन् - नपुं०

पुलिङ्ग

प्र० पु०

पठन् अस्ति

द्वि० वचन

पठन्तौ स्तः

बहुवचन

पठन्तः सन्ति

प्र० पु० पठन् अस्ति

पठन्तौ स्तः

पठन्तः स्तः

३० पु० पठन् अस्मि

पठन्तौ स्वः

पठन्तः स्मः

वह पढ़ रहा है।

सः पठन् अस्ति।

तुम पढ़ रहे हो।

त्वं पठन् अस्ति

मैं पढ़ रहा हूँ

अहं पठन् अस्मि

वे दोनों पढ़ रहे हैं।

तौ पठन्तौ स्तः।

तुम दोनों पढ़ रहे हो।

मूयां पठन्तौ स्तः

हम दोनों पढ़ रहे हैं।

आमां पठन्तौ स्वः

वे सब पढ़ रहे हैं।

ते पठन्तः सन्ति।

तुम लोग पढ़ रहे हो।

भूयं पठन्तः स्तः।

हम लोग पढ़ रहे हैं।

वयं पठन्तः स्मः



3. संदिग्ध वर्तमान - जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं। संदिग्ध वर्तमान काल के क्रिया के साथ 'शतृ' प्रत्यय जोड़ कर 'अस्' धातु का लृट् लकार में प्रयोग होता है। यथा -

वह पढ़ता होगा	वे दोनों पढ़ते होंगे	वे सब पढ़ते होंगे
सः पठन् भविष्यति	तौ पठन्तौ भविष्यतः	ते पठन्तः भविष्यन्ति
तुम पढ़ते होगे।	तुम दोनों पढ़ते होगे	तुम लोग पढ़ते होगे
त्वं पठन् भविष्यसि।	भुवः पठन्तौ भविष्यतः	भूयः पठन्तः भविष्यन्ति।
मैं पढ़ रहा होंगा।	हम दोनों पढ़ रहे होंगे।	हम लोग पढ़ रहे होंगे।
अरे पठन् भविष्यसि	आप पठन्तौ भविष्यतः	वयं पठन्तः भविष्यामः।

4. पूर्ण वर्तमान - इससे वर्तमान काल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। पूर्ण वर्तमान काल के क्रिया के साथ 'क्त' या 'कृतु' प्रत्यय जोड़ कर 'अस्' धातु का लृट् लकार में प्रयोग करते हैं। यथा - वह आया है।

सः आगतः अस्ति।	वे दोनों आये हैं।	वे लोग आये हैं।
या सः आगतवान् अस्ति।	तौ आगतौ स्तः।	ते आगताः सन्ति।
	तौ आगतवन्तौ स्तः।	ते आगतवन्तौ सन्ति।